P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

केदारनाथ आपदा प्रभावित उच्च प्राथमिक विद्यालयों की स्थिति का अध्ययन

शंकर सिंह
शोधार्थी,
शिक्षा विभाग,
बिडला परिसर
हे.न.ब.गढ़वाल विश्वविद्यालय,
श्रीनगर गढ़वाल, भारत

रमा मैखुरी
प्रोफेसर,
शिक्षा विभाग,
बिडला परिसर
हे.न.ब.गढ़वाल विश्वविद्यालय,
श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखण्ड,
भारत

सारांश

उत्तराखण्ड जिसे देव भूमि के नाम से जाना जाता है वही दूसरी ओर प्रकृति की गोद में बसा है अर्थात यह सर्जन और विध्वंस के मध्य सन्तुलन के उस केंद बिन्दु की तरह है जो सम्पूर्ण जीवन का चक्र है प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य केदारनाथ आपदा प्रभावित उच्च प्राथमिक विद्यालयों के भौतिक सुविधाओ एवं शिक्षण से सम्बन्धित परिस्थितियों पर आपदा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है प्रस्तुत शोध पत्र में न्यादर्श के लिए केदारनाथ आपदा प्रभावित रुद्रप्रयाग जिले के अगस्त्यमुनि विकासखण्ड के आपदा प्रभावित 5 उच्च प्राथमिक विद्यालयों का चयन किया गया है प्रद्त्तो के संकलन के लिए शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित विघालय अनुसूची का प्रयोग किया गया है आंकड़ो के विश्लेषण के लिए प्रतिशत का प्रयोग किया गया है आंकड़ो के संग्रहण और विश्लेषण के उपरान्त निष्कर्ष प्राप्त हुए है कि आपदा के उपरान्त विद्यालयों की भौतिक स्थितियों एवं शिक्षण कार्य से सम्बन्धित स्थितियां प्रभावित हुई है ।

मुख्य शब्द : केदारनाथ आपदा, विद्यालयों की स्थिति एवं उच्च प्राथमिक विघालय।

प्रस्तावना

शिक्षा के जरिये ही मानव अनुसंधानों ने सर्वप्रथम जब एक क्रमबद्ध इकाई के रूप में विश्व का चित्र खींचा तो इसे ब्रह्माण्ड Cosmas की संज्ञा दी गयी। विशाल ब्रह्माण्ड के ज्ञात ग्रहों में पृथ्वी ही एकमात्र जीवन से परिपूर्ण ग्रह है। जिसमें उपस्थित वातावरण पर्यावरण अर्थात पृथ्वी की प्रकृति ही पृथ्वी को अनोखा तथा जीवन का आधार देती है। जो किसी दैवीय शक्ति की भाँति आश्चर्यचकित करने वाली पर प्रकृति विज्ञान की कसौटी पर एकदम सटीक व व्यावहारिक है। पृथ्वी में उपस्थित पर्यावरणीय दशाओं को मुख्यतः दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। पृथ्वीतल पर अनेक ऐसी घटनाएं घटती है जो अत्यन्त विनाशकारी होती है। जिन्हें सामान्य तौर पर प्राकृतिक आपदाएं कहा जाता है। आपदा को अंग्रेंजी भाषा में Disaster कहा है, Disaster शब्द की उत्पत्ति फ्रेंच भाषा के शब्द 'डेस्सास्टेट' से हुई है। डेस्सास्टेट में 'डेस्म (Dus) का अर्थ 'बुराई'(Bad) . अस्टेर (Aster) का अर्थ 'स्टार' (Star) इस प्रकार ''डिजॉस्टर'' का शाब्दिक अर्थ 'एक बुरा सितारा' (Bad Star)। आपदा शब्द वास्तव में ज्योतिष शास्त्र (Dstrological theme) से आया है इसका अर्थ है कि जब तारे बुरी स्थिति में होते है तब बुरी घटनाएं होती हैं वास्तव में प्राकृतिक या मानव जनति उन घटनाओं को आपदा कहा जाता है प्राकृतिक आपदा प्राकृतिक आपदाएं पृथ्वी की आंतरिक तथा वाह्य शक्तियों के कारण उत्पन्न होती हे। जैसे ज्वालामुखी विस्फोट, भूकम्प, बाढ़, इत्यादि प्राकृतिक आपदा के उदाहरण है। मानव जनित आपदा मानव जनित आपदाओं की उत्पत्ति में अनेकों मानवीय गतिविधियां भी आज सीधे रूप में जिम्मेदार है जैसे–भोपाल गैस त्रासदी, मृदु चेरनोविल नाभिकीय आपदा इत्यादि ऐसे उदाहरण है जो मानव जनित तथा प्रत्यक्ष रूप से मानव क्रियाकलापों के कारण घटित होती है। विश्व में प्राकृतिक आपदाओं ने मानव तथा समस्त जीवधारियों के भयंकर रूप से प्रभावित किया है। 20 अक्टूबर 1991 को उत्तरकाशी में आयी भूकम्प एवं इससे प्रभावित जनपद टिहरी, चमोली और रूद्रप्रयाग में आपदा के कारण लगभग 800 लोगों की मृत्यु 500 से अधिक व्यक्ति घायल हुये और 2000 गांवों की करीब 45 लाख लोग प्रभावित, 25000 से अधिक मकान आंशिक रूप से प्रभावित, 4000 से अधिक पशु हानि 370 करोड़ रूपये की कुल हानि हुईं। 13 दिसम्बर 2012 रूद्रप्रयाग जनपद के ऊखीमठ तहसील मुख्यालय के क्षेत्र के ब्राह्मणखोली, शिरिया, मंगोली, चुन्नी, किमाणा, जुआ, गुप्तकाशी, और जग्गी बेडुला सहित कईं इलाकों में बादल फटने

की वजह से 31 लोगों की मृत्यु हुईं। कुल 70 भवन जमींदोज और 230 परिवार बेघर हुये। केदारनाथ राज्य के रूद्रप्रयाग जिले में समुद्रतल से 3584 मीटर की ऊँचाई पर स्थित भगवान शिव को समर्पित स्थान है। धार्मिक मान्यता के अनुसार महाभारत युद्ध के बाद पांडवों ने अपने सगे सम्बन्धियों की मृत्यु पर प्रायश्चित यही पर किया था। हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों में उल्लखित बारह ज्योतिर्लिंगों में सबसे ऊँचा एवं भैरव मंदिर शंकराचार्य की समाधि और गांधी सरोवर जैसे आदि प्रसिद्ध स्थल है। दिसम्बर से मार्च तक यह उच्च हिमालयी क्षेत्र बर्फ से ढका रहता है और केदारनाथ भगवान शिव का निवास स्थान माना जाता है। विगत वर्ष 14–17 जून 2013 की सुबह तक राज्य में हुई लगातार वृष्टि (340 मि.मी.) जोकि सामान्य बेंचमार्क से लगभग 40 प्रतिशत अधिक थी। फलस्वरूप भारी मुसलाधार बारिश बादल फटने से ग्लेशियर पिघलने, भूस्खलन व नदियों (अलकनन्दा, भागीरथी, मंदाकिनी, लक्ष्मण गंगा, अस्सीगंगा, कंचनगंगा व पिण्डर) आदि से तीव्र उफान से बाढ़ के कारण चमोली, उत्तरकाशी, रूद्रप्रयाग, पौढ़ी गढ़वाल, टिहरी गढ़वाल व पिथौरागढ़ में भयंकर तबाही मची। सुदूर संवेदनशील संस्थान (IIRS) के अनुसार तीव्र वर्षा के कारण केदारनाथ के उत्तर पूर्व में स्थित कंपेनियन व चौराबारी ग्लेशियर की ऊपरी परत पिघलकर गांधी सरोवर को तोड़ते हुए केदारनाथ की ओर मलबे के साथ तीव्र वेग से प्रभावित हुई जिस कारण केदारनाथ मंदिर परिसर की लगभग 90 धर्मशालायें एवं सैकड़ों दुकाने व पूरा मंदिर परिसर मलबे में पट गया। हजारों लोग मलबे में दफल हो गये या बहकर कालातित हुए। केदारनाथ आपदा दुनिया की सबसे बडी आपदाओं में मानी गयी है इसे 'हिमालयी सुनामी' का नाम भी दिया गया है तथा साथ ही इसे दैवीय आपदा जैसे उपनाम भी दिये गये है। केदारनाथ की प्रलयकारी आपदा का राज्य के सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक, शैक्षिक, स्वास्थ्य इत्यादि उन सभी पहलुओं पर भंयकर त्रासदी पूर्ण नकारात्मक प्रभाव पड़ा जो मानवीय जीवन से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष तौर से जुड़े है। उत्तराखण्ड के 15760 आबाद गाँवों में से 1400 गाँव पर्वतीय क्षेत्रों में स्थित है। जाहिर तौर पर हिमालयी राज्य के पर्वतीय गाँव प्रकृति के गोद में स्थित हैं तथा प्रकृति की हर घटना इन ग्रामवासियों को प्रत्यक्ष तौर पर अत्यधिक प्रभावित करती है। राज्य के 14000 पर्वतीय गांव में से केदारनाथ आपदा में लगभग 5000 गाँव प्रभावित हुए। आपदा में करीब 2500 गाँवों को क्षति पहुँची जबकि 151 गाँवों में बने पैमाने पर त्रासदी/बर्बादी हुई। 2500 मकान पूर्ण रूप से क्षतिग्रस्त हुए है। मात्र 3 जिलों में कुल 1840 मार्ग टूटे हैं। हिमालयी सुनामी के नाम से प्रसिद्ध आपदा ने तबाही के आगोश में सबसे अधिक केदारनाथ व मंदाकिनी नदी की घाटियों को लिया। गौरीकुण्ड–केदारनाथ पैदलमार्ग पर स्थित 100 से अधिक दुकानों वाला रामबाणा बाजार का अस्तित्व पूरी तरह समाप्त हो गया है। अगस्त्यमुनि, गौरीकुण्ड, सोनप्रयाग व तिलवाड़ा भी भंयकर त्रासदी की स्थिति में पहुँचे। इस आपदा की सर्वाधिक मार झेलने वाली ऊखीमठ तहसील के 103 गाँवों के सड़क व पैदल मार्ग पूरी तरह ध्वस्त हो गये। कईं गाँव तो पूरी तरह मंदाकिनी नदी मे विलीन हो गये है। अमर उजाला 21 जून 2013 के अनुसार हिमालयी सुनामी में लगभग 1076 सड़के पूरी तरह बर्बाद व 94 सेतु बाढ़ के साथ बह गये जिससे 250 करोड़ से अधिक का नुकसान हुआ। केदारनाथ मंदिर के चारों ओर 400 मीटर एरिया में मौजूद सात हजार लोगों में से मात्र एक हजार ही बच पाये तथा कीर्तिनगर में सरकारी विभागों व स्कूलों को प्रारम्भिक रूप से 10 करोड़ के नुकसान का आकलन हुआ और आपदा प्रभावित इलाकों में लगभग 30 हजार यात्री फंसे हुए थे। गोविंद घाट से हेमकुण्ड साहिब पैदल मार्ग पर बसे भ्यूंडार और पुलना गांव का नामोनिशान तक गायब हो गया है। जिससे भ्यूंडार गाँव में 500 परिवार रहते थे सभी तबाही में दफन हो गये है। सुनामी में 20 से अधिक मकानों के अवशेष तक शेष नही बच पाये। आपदा सैलाब में डेढ हजार हेक्टेयर से अधिक कृषि भूमि को पानी अपने साथ तबाह करता व बहाता हुआ ले गया तथा 13 हजार 137 हेक्टेयर भूमि पर पत्थर, रेत का मलबा आ गया है। अमर उजाला 2 जुलाई 2013 के अनुसार संयुक्त राष्ट्र एजेंसी ने आपदा में लापता लोगों की संख्या 11 हजार से अधिक होने का अनुमान किया है। टिहरी जिले में 245 सड़के अवरूद्ध होने से गाँवों में अनाज का संकट गहरा गया था। साथ ही राज्य के 4200 गाँव सड़क मार्ग से पूरी तरह कट गए। जल प्रलय के बाद विष्णुप्रयाग, हिमगिरी, चमोली हाइड्रो और तेफना जल विद्युत परियोजना का पॉवर हाउस पूर्ण रूप से क्षतिग्रस्त हो गया। 80 करोड़ की लागत से निर्माणाधीन कोश्यारताल पंपिंग योजना इनटेक वाला फिल्टर सप्लाई पर घनसाली जल निगम 13 करोड़ रूपये खर्च कर चुका था जो आपदा से पूर्णतः बर्बाद हो गयी है। अकेले गबनी गाँव के 35 परिवारों के चिराग केदारनाथ आपदा में दफन हो गये है। अमर उजाला 21 जुलाई 2013 के अनुसार आपदा के कारण चारधाम यात्रा रूकने से 32 हजार करोड़ का व्यापार राज्य में प्रभावित हुआ। वर्ष 2013–14 के लिए 25000 करोड़ रूपये की आय अनुमान लगाया गया था, राज्य में करीब 4.70 करोड़ लोगों के अपने का अनुमान था। केदारनाथ और बद्रीनाथ का 2000 से ज्यादा पंडा पुरोहित समाज, 12 हजार से अधिक कंडी, घोड़े, खच्चर से जुड़ा तबका, एक हजार से ज्यादा महिला एवं स्वयं सहायता समूह चमोली, रूद्रप्रयाग, उत्तरकाशी और पिथौरागढ़ में करीब ढाई हजार लोगों का पारिवारिक उद्योग प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हुआ है। एक अनुमान के मुताबिक यात्रा रूट पर ही होटल, लॉज, धर्मशालाओं की लगभग संख्या 20 हजार होगी तथा एक लाख से ज्यादा लोगों का रोजगार इससे जुड़ा है। करीब 12 हजार कार, जीप, बसे भी है जो अत्यधिक प्रभावित हुए है। सोशियल इकोनामिक सेक्टर रिपोर्ट रूद्रप्रयाग 2014 के अनुसार लोगों के राहत व बचाव कार्य में पहले फेस के अन्तर्गत रूद्रप्रयाग जिले में 15 राहत व बचाव केन्द्र 17 जून – 30 जून तक चलाये गये, तथा इस बीच राहत केन्द्रों में लगभग 82,825 यात्रियों ने शरण ले रखी थी तथा रूद्रप्रयाग जिले के गाँव पूरी तरह सम्पर्क से कटे हुए थे। इन गाँवों में ग्रामवासी सम्पूर्ण जनता, महिला, बच्चे यहाँ

तक कि नवजात बच्चे भी जिन्दगी व मौत से जूझते रहे। जिले की कृषि आय में 15–18 प्रतिशत पोषित करती है लेकिन आपदा में 206.612 हेक्टेयर कृषि भूमि बर्बाद हो गयी है 16–17 जून की आपदा में बद्रीनाथ में बादल फटने के उपरांत हुए भयंकर भूस्खलन से 300 गाँव व 6 ब्लॉक गम्भीर रूप से प्रभावित हुए जिले में 837 आपदा प्रभावित घरों में से 310 पूरी तरह बर्बाद तथा 527 आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त हुए। इसके अलावा भी केदारनाथ मंदिर सहित ऊखीमठ, अगस्त्यमुनि, उत्तरकाशी इत्यादि सभी प्रभावित क्षेत्रों में जो तबाही हुई अकल्पनीय है और इसकी भरपाई करना असम्भव है। कभी पर्यटकों तीर्थयात्रियों को मंदाकिनी घाटी का सौंदर्य, आकर्षित करती संस्कृति, अद्भुत प्राकृतिक संगम, नदी, पहाड़, घाटी, पक्षियों का मधुर संगीत, हिमालय की ताजी बर्फ आकर्षित करती थी। मगर आपदा की भयावह त्रासदी का संकट ने ना जाने कितने अनगिनत मानवीय संस्कृति का जीवन को मिट्टी के ढेरों व पत्थरों के नीचे दफन कर दिया है रूद्रप्रयाग जिले के 709 व्यक्तियों की मौत हुई जो रोजगार के लिए केदारनाथ गये थे। सोशियल सेक्टर स्तर रिपोर्ट पिथौरागढ़ 31 मार्च 2014 के अनुसार पिथौरागढ़ जिले में 1,111 आंगनबाड़ी केन्द्रों में से 90 केन्द्र क्षतिग्रस्त की श्रेणी में है। 3 केन्द्र पूरी तरह क्षतिग्रस्त 37 आंशिक क्षतिग्रस्त तथा 49 मूल केन्द्र को छोड़ दूसरे स्थानों पर स्थानान्तरित होकर चल रहे है।उपरोक्त कुल 36 स्कूलों में से 19 पूर्णतः क्षतिग्रस्त तथा 17 आंशिक क्षतिग्रस्त हुए है। जिले के 270 स्कूलों में से 55 पूरी तरह क्षतिग्रस्त तथा 215 आंशिक क्षतिग्रस्त हुये हैं। सोशियल सेक्टर स्टेट्स रिपोर्ट चमोली 2014 के अनुसार जिले में 46 प्राथमिक स्कूल पूरी तरह ध्वस्त हो गये है। 109 प्राथमिक स्कूलों में क्षतिग्रस्त के कारण आवश्यक मरम्मत की आवश्यकता है। 7 उच्च प्राथमिक विद्यालयों को आपदा में ध्वस्त होने के कारण पुनः बनाने की जरूरत है। 33 उच्च प्राथमिक विद्यालयों को क्षतिग्रस्तता के चलते ठीक करने की आवश्यकता है। जिले में 36 सरकारी हाईस्कूल आंशिक क्षतिग्रस्त तथा 3 मील हाईस्कूल आंशिक क्षतिग्रस्त हुए है। जिले में 205 आपदा प्रभावित स्कूल में पीने के पानी की आवश्यकता है। एशियन डिजास्टर सेक्टर (2008) इम्पेक्ट ऑफ डिजास्टर ऑन द एजुकेशन सेक्टर कम्बोडिया, प्रोजेक्ट द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदन में विभिन्न समस्याऐं ज्ञात हुई कम्बोडिया में हर साल बाढ़ से प्रभावित स्कूलों का शिक्षा सत्र आने वाली बाढ़ के कारण वहाँ के छात्रों को स्कूल तक पहुँचने में विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कम्बोडिया में स्कूलों में 22 प्रतिशत विद्यार्थी तभी स्कूल आते है जब बाढ़ का प्रभाव खत्म हो जाता है। बाद के कारण पिछले 5 वर्षों में कम्बोडिया में 51 प्रतिशत प्रतिवर्ष स्कूल छोड़ रहे है। इस अध्ययन में पाया गया कि आपदा के कारण शैक्षिक सत्र की अवधि अधिक हो जाती है तथा शैक्षिक गतिविधियां सुचारू रूप से नहीं चल पाती है। आपदा के कारण कई स्कूलों को दूसरे स्थानों में स्थानान्तरित करना पड़ता है तथा वहां पर्याप्त सुविधायें न मिल पाने के कारण शिक्षा की गुणवत्ता घट जाती है। इस अध्ययन के अनुसार सन् 2000 में 18 प्रतिशत स्कूल बाढ़ द्वारा पूर्णतः नष्ट हो गये थे जिनकी संख्या लगभग 1000 है। स्कूलों के नष्ट होने से 3 से 4 लाख प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थी तथा 0.5 लाख माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शिक्षा का संकट खड़ा हो गया। सोशियल सेक्टर प्लान रिपोर्ट मार्च 2014 रूद्रप्रयाग के अनुसार जिले के 11 प्राथमिक तथा 4 उच्च प्राथमिक स्कूल पूरी तरह ध्वस्त हुये है।माध्यमिक स्तर पर 2 इंटर कॉलेज पूर्णतः ध्वस्त तथा 41 इंटर कॉलेज आंशिक क्षतिग्रस्त से जूझ रहे हैं।जिले में 31 स्कूलों में भी क्षतिग्रस्त हुई तथा ये स्कूल खतरे की जद में चल रहे हैं। 12 निजी विद्यालय भी आपदा में क्षतिग्रस्त हुये है। रूद्रप्रयाग जिले के अगस्त्यमुनि ब्लॉक के 25, ऊखीमठ के 35 राजकीय प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक विद्यालय पूर्णतः या आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त हुये है।

रूद्रप्रयाग जिले के प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक विद्यालयों में हुये प्रभाव विवरण :–

छात्र	छात्राये	कलु विद्याथी	नुकसान बर्बादी लाख रू में	माध्यमिक विद्यालयों में नुकसान बर्बादी लाख रू में
1007	1129	2136	407.47	420.00

अगस्त्यमुनि विकासखण्ड में प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक विद्यालयों में हुये प्रभाव विवरण :–

विद्यालय	छात्र	छात्राये	कलु विद्याथी	नुकसान बर्बादी लाख रू में
प्राथमिक विद्यालय	215	244	459	117.70
उच्च प्राथमिक विद्यालय	144	131	275	80.59

रूद्रप्रयाग अगस्त्यमुनि विकासखण्ड में 25 प्राथमिक तथा 4 उच्च प्राथमिक विद्यालय आंशिक क्षतिग्रस्त तथा 3 उच्च प्राथमिक विद्यालय पूर्णतः ध्वस्त, 43 उच्च प्राथमिक विद्यालय आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त हुए है। सरकारी आंकड़े के अनुसार अगस्त्यमुनि के प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्ययनरत लगभग 965 छात्र–छात्राएं प्रभावित है जिसमें से उच्च प्राथमिक स्तर पर 275 छात्र–छात्राएं प्रभावित हुए है, यह अध्ययनरत अगस्त्यमुनि के उच्च प्राथमिक प्रभावित विद्यालयों तथा उनमें अध्ययनरत छात्र–छात्राओं पर ही है।

समस्या कथन

''केदारनाथ आपदा प्रभावित उच्च प्राथमिक विद्यालयों की स्थिति का अध्ययन''।

कठिन शब्दों का परिभाषीकरण

केदारनाथ

केदारनाथ द्वादश ज्यातिर्लिंगों में एक है। यह समुद्रतल से 3584 मीटर की ऊँचाई पर मंदाकिनी नदी के शीर्ष पर स्थिति है।

आपदा

प्रकृति या मानवकृत घटनाएं जो प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र के जैविक तथा अजैविक संघटकों में असन्तुलन उत्पन्न कर देते हैं। जिससे पृथ्वीतल पर अनेकों विनाशकारी घटनाएं घटित होती है, जो प्रायः आपदा कही जाती है।

उच्च प्राथमिक स्तर

प्रस्तावित अध्ययन में उच्च प्राथमिक विद्यालयों से तात्पर्य कक्षा 6–8 तक के सरकारी विद्यालयों से हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

1. आपदा प्रभावित उच्च प्राथमिक विद्यालयों के भौतिक सुविधाओ एवं शिक्षण से सम्बन्धित परिस्थितियों पर आपदा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है।
2. केदारनाथ आपदा प्रभावित अगस्त्यमुनि के उच्च प्राथमिक विद्यालयों की आपदा से पूर्व तथा आपदा के उपरांत स्थिति का अध्ययन करना।
3. प्राथमिक विद्यालयों की आपदा से पूर्व तथा आपदा के उपरांत स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन ।

अध्ययन हेतु प्रयुक्त विधि

अध्ययन के प्रकृति एवं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोधकार्य की जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रूप में आपदा प्रभावित अगस्त्यमुनि विकासखण्ड के उच्च प्राथमिक विद्यालयों को लिया गया है।

न्यादर्श चयन

अनुसंधानकर्ता के द्वारा प्रतिचयन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन के लिए आपदा प्रभावित विद्यालयों का चयन करने हेतु सौद्देश्य न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श चयन प्रक्रिया में सर्वप्रथम रूद्रप्रयाग जनपद, विकासखण्ड अगस्त्यमुनि आपदा प्रभावित उच्च प्राथमिक विद्यालयों को दो भागों में बांटा गया है

1.पूणर्तः आपदा प्रभावित 2. आंशिक आपदा प्रभावित। पूणर्तः आपदा प्रभावित एवं आंशिक आपदा प्रभावित सभी विद्यालयों का चयन सौद्देश्य न्यादर्श विधि द्वारा किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण/अनुसूची

आपदा के प्रभावित क्षेत्र में उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालय में भौतिक सुविधाओं एवं विद्यालय की आपदा से पूर्व तथा आपदा के उपरात स्थितियों के अध्ययन हेतु अनुसंधानकर्त्ता ने साक्षात्कार अनुसूची का चयन किया है, अनुसूची में 24 प्रश्नों को शामिल किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियां

प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण प्राप्त अंकों के विश्लेषण प्राप्तांकों के प्रतिशत का प्रयोग किया है

आंकड़ो का विश्लेषण एवं परिणामों की व्याख्या

आपदा प्रभावित विद्यालय संरचना पर आधारित तालिका

तालिका 1.1

क्र0सं	आपदा प्रभावित विद्यालय			
	आपदा से पूर्व स्थिति		आपदा उपरान्त स्थिति	
कथन 1	विद्यालय प्रकृति का प्रकार			
1	पक्का	100%	पूर्णतः ध्वस्त	60%
2	क्च्चा	0%	आंशिक ध्वस्त	40%
कथन 2	विद्यालय क्षेत्रफल पर्याप्त उपलबधता			
1	हाँ	100%	हाँ	20%
2	नहीं	0%	नहीं	80%
कथन 3	विद्युत व्यवस्था			
1	हाँ	80%	हाँ	40%
2	नहीं	20%	नहीं	60%
कथन 4	शौचालय व्यवस्था			
1	हाँ	100%	हाँ	40%
2	नहीं	0%	नहीं	60%
कथन 5	पेयजल की व्यवस्था			
1	हाँ	80%	हाँ	40%
2	नहीं	20%	नहीं	60%
कथन 6	खेल मैदान की उपलब्धता			
1	हाँ	80%	हाँ	20%
2	नहीं	20%	नहीं	80%

तालिका 1.1 के कथन 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि आपदा से पूर्व अगस्त्यमुनि विकासखण्ड में उच्च प्राथमिक स्तर के चयनित 100% विद्यालय पक्के भवनों में संचालित किए जा रहे थे जबकि आपदा के उपरांत आपदा प्रभावित 60% विद्यालय पूर्णत ध्वस्त हो चुके हैं, तथा 40% विद्यालय आंशिक स्प से ध्वस्त हुए है। अतः आपदा के कारण विद्यालय भवनों को नुकसान से

विद्यालयों की स्थिति शिक्षा हेतु प्रभावित हुई है। कथन 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि आपदा से पूर्व विद्यालयों के पास पर्याप्त क्षेत्रफल की सुविधा थी। जबकि आपदा के प्रभावित 80% विद्यालयों के पास आपदा के उपरांत पर्याप्त क्षेत्रफल नही है तथा मात्र 20% आपदा प्रभावित विद्यालयों के पास ही पर्याप्त क्षेत्रफल उपलब्ध है। अतः आपदा के कारण प्रभावित विद्यालयों में विद्यालय के पर्याप्त क्षेत्रफल में कमी आयी है।कथन 3 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि आपदा प्रभावित क्षेत्र में आपदा से पूर्व 80% विद्यालयों में विद्युत की व्यवस्था थी तथा 20% में नही, जबकि आपदा के उपरांत आपदा प्रभावित उच्च प्राथमिक विद्यालयों में 60% विद्यालयों मे विद्युत की सुचारू व्यवस्था है तथा 40% उच्च प्राथमिक आपदा प्रभावित विद्यालयों में विद्युत की कोई व्यवस्था नही है। अतः कहा जा सकता है कि आपदा प्रभावित विद्यालयों में विद्युत की व्यवस्था आपदा के कारण प्रभावित हुई है। कथन 4 के अध्ययन से स्पष्ट है कि आपदा प्रभावित उच्च प्राथमिक विद्यालयों में आपदा से पूर्व 100% विद्यालयों में शौचालय की व्यवस्था थी। जबकि आपदा के उपरांत इन विद्यालयों में से 40% विद्यालयों के पास शौचालय की उपलब्धता है और 60% विद्यालयों में शौचालय की व्यवस्था उपलब्ध नही है। आपदा प्रभावित विद्यालयों में शौचालय की व्यवस्था आपदा के कारण प्रभावित हुई है। विद्यालयों से ही छात्र–छात्राओं को स्वच्छता के बारे में पूर्ण जानकारी होगी इसके तहत प्रत्येक विद्यालयों में छात्र–छात्राओं व शिक्षक–शिक्षिकाओं हेतु शौचालय की व्यवस्था नही है। कथन 5 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि आपदा प्रभावित उच्च प्राथमिक विद्यालययों में आपदा से पूर्व 80% विद्यालयों मे पेयजल की सुचारू व्यवस्था थी तथा 20% विद्यालयों में नही थी। जबकि आपदा के उपरांत आपदा प्रभावित उच्च प्राथमिक विद्यालयों में से 40% में ही पेयजल की व्यवस्था उपलब्ध है जबकि बाकी 60% विद्यालयों में आपदा के उपरांत पेयजल की कोई व्यवस्था नही है। अतः कहा जा सकता है कि आपदा प्रभावित विद्यालयों की पेयजल व्यवस्था आपदा के कारण प्रभावित हुई है तथा छात्र–छात्राओं के लिये दुर्गम क्षेत्रों के विद्यालयों में भी पेयजल की सुचारू व्यवस्था नहीं है। कथन 6 के अध्ययन से स्पष्ट है कि आपदा प्रभावित उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में 80% विद्यालयों में आपदा से पूर्व विद्यार्थियों के खेलने हेतु मैदान की व्यवस्था थी तथा 20% विद्यालयों में नही, जबकि आपदा के उपरांत मात्र 20% विद्यालय आपदा प्रभावित विद्यालयों में ही खेल हेतु मैदान की व्यवस्था है तथा 80% विद्यालयों में खेल के मैदान की उपलब्धता नही है। अतः कहा जा सकता है कि आपदा प्रभावित विद्यालयों में आपदा के कारण खेल मैदान अत्यधिक क्षतिग्रस्त हो गये हैं या बह गये हैं जिस कारण विद्यार्थियों के लिये खेलने हेतु खेल मैदान उपलब्ध नहीं हैं।

तालिका 1.2

विद्यालयों में उपलब्ध संसाधनों पर आधारित तालिका

क्र0सं0	आपदा से पूर्व स्थिति		आपदा उपरान्त स्थिति	
कथन 7	फर्नीचर की व्यवस्था			
1	कुर्सी मेज	80%	कुर्सी मेज	40%
2	टाट पट्टी	20%	टाट पट्टी	60%
कथन 8	पुस्तकालय की व्यवस्था			
1	हाँ	100%	हाँ	40%
2	नहीं	0%	नहीं	60%
कथन 9	खेल सामग्री की उपलब्धता			
1	हाँ	100%	हाँ	40%
2	नहीं	0%	नहीं	60%
कथन 10	मिड डे मील की व्यवस्था			
1	हाँ	100%	हाँ	100%
2	नहीं	0%	नहीं	0%
कथन 11	कम्प्यूटर की व्यवस्था			
1	हाँ	80%	हाँ	40%
2	नहीं	20%	नहीं	60%
कथन 12	कमरों की व्यवस्था			
1	हाँ	80%	हाँ	20%
2	नहीं	20%	नहीं	80%

तालिका 1.2 के कथन 7 के अवलोकन से स्पष्ट है कि आपदा से पूर्व 80% विद्यालयों में कुर्सी मेज तथा 20% विद्यालयों में छात्रों के बैठने हेतु टाटपट्टी की व्यवस्था थी, जबकि आपदा के उपरांत आपदा प्रभावित विद्यालयों में से 40% के पास मेज कुर्सी तथा 60% विद्यालयों में बैठने हेतु टाटपट्टी की व्यवस्था है। अतः

कहा जा सकता है कि आपदा प्रभावित विद्यालयों में आपदा के कारण विद्यालयों के फर्नीचर की व्यवस्था प्रभावित हुई है जिस कारण छात्र–छात्राओं को सीखने के लिये उचित व्यवस्था नहीं मिल पा रही है। कथन 8 के अवलोकन से स्पष्ट है कि आपदा प्रभावित उच्च प्राथमिक विद्यालयों में आपदा से पूर्व 100% में अर्थात सभी विद्यालयों में पुस्तकालय की व्यवस्था थी। जबकि आपदा के उपरांत प्रभावित विद्यालयों में से 40% विद्यालयों में पुस्तकालय की व्यवस्था है तथा 60% विद्यालयो में पुस्तकालय की व्यवस्था नही है। अतः कहा जा सकता है कि आपदा प्रभावित विद्यालयों में जहॉ आपदा से पूर्व सभी विद्यालयों में छात्र–छात्राओं के लिये पुस्तकालय की व्यवस्था थी वहीं आपदा के उपरान्त विद्यालय की पुस्तकालय की व्यवस्था अत्यधिक प्रभावित हुई है जिस कारण छात्र–छात्राओं को सीखने के लिये उचित वातावरण नहीं मिल पा रहा है। कथन 9 से स्पष्ट है कि आपदा प्रभावित उच्च प्राथमिक विद्यालयों में आपदा से पूर्व 100% विद्यालयों में विद्यार्थियों के शारीरिक विकास हेतु खेल सामग्री उपलब्ध थी जबकि आपदा के उपरांत उच्च प्राथमिक स्तर के आपदा के आपदा प्रभावित विद्यालयों में से 40% विद्यालयों में खेल सामग्री उपलब्ध है तथा 60% विद्यालयों में खेल सामग्री उपलब्ध नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि आपदा प्रभावित विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के अर्न्तगत विद्यालयों की खेल सामग्री आपदा के कारण नष्ट हो गयी है जिस कारण विद्यार्थियों को पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने का अवसर नहीं मिल पा रहा है। कथन 10 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि आपदा प्रभावित उच्च प्राथमिक विद्यालयों में आपदा से पूर्व सभी विद्यालयों में छात्र–छात्राओं हेतु मिड–डे मील की मध्यान–भोजन की व्यवस्था थी। और आपदा के उपरांत भी सभी विद्यालयों में मिड–डे मील की व्यवस्था है। कथन 11 से स्पष्ट है कि आपदा प्रभावित उच्च प्राथमिक विद्यालयों में आपदा से पूर्व 80% विद्यालयों के पास कम्प्यूटर की व्यवस्था उपलब्ध थी तथा 20% विद्यालयों के पास नही मगर आपदा के उपरांत 40% विद्यालयों में कम्प्यूटर की व्यवस्था उपलब्ध है तथा 60% विद्यालयों में कम्प्यूटर की व्यवस्था नही है। कथन 12 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि आपदा प्रभावित उच्च प्राथमिक विद्यालयों में आपदा से पूर्व 80% के पास विद्यार्थियों के लिए अलग–अलग कमरों की व्यवस्था थी तथा 20% विद्यालयों के पास प्रत्येक कक्षा के लिए अलग–अलग कमरे की व्यवस्था नही थी जबकि आपदा के उपरांत प्रभावित विद्यालयों में से मात्र 20% विद्यालयों के पास कक्षाओं के अलग–अलग बैठने हेतु कमरों की व्यवस्था उललब्ध है। तथा 80% विद्यालयों के पास कक्षाओं के लिए अलग–अलग कमरें की व्यवस्था नही है। अतः कहा जा सकता है कि आपदा प्रभावित विद्यालयों में छात्र–छात्राओं की अलग–अलग कक्षाओं हेतु अलग–अलग कमरों की व्यवस्था नहीं है जिस कारण छात्र–छात्राओं को विद्यालय प्रांगण या एक ही कक्ष में दो कक्षाओं को शिक्षित किया जा रहा है।

तालिका 1.3
शिक्षण अधिगम पर आधारित तालिका

क्र0सं0	आपदा से पूर्व स्थिति		आपदा उपरान्त स्थिति	
कथन 13	सहायक सामग्री की व्यवस्था			
1	हाँ	100%	हाँ	100%
2	नहीं	0%	नहीं	0%
कथन 14	शिक्षण कार्य नियमित करना			
1	हाँ	100%	हाँ	40%
2	नहीं	0%	नहीं	60%
कथन 15	नियमित गृहकार्य दिया जाता है।			
1	हाँ	100%	हाँ	100%
2	नहीं	0%	नहीं	0%
कथन 16	गृहकार्य नियमित चेक			
1	हाँ	100%	हाँ	1000%
2	नहीं	0%	नहीं	0%
कथन 17	वर्ष में परिक्षायें			
1	4 बार	80%	4 बार	80%
2	2 बार	20%	2 बार	20%
कथन 18	विद्यालय का निरीक्षण			
1	हाँ	80%	हाँ	80%
2	नहीं	20%	नहीं	20%

तालिका 1.3 के कथन 13 के अध्ययन से स्पष्ट है कि आपदा प्रभावित उच्च प्राथमिक विद्यालयों में आपदा से पूर्व सभी प्रभावित विद्यालयों में शिक्षण हेतु सहायक सामग्री का प्रयोग किया जाता था। और आपदा के

उपरांत भी सभी आपदा प्रभावित विद्यालयों में सहायक सामग्री का प्रयोग किया जाता है। कथन 14 दर्शाता है कि उच्च प्राथमिक आपदा प्रभावित विद्यालयों में आपदा से पूर्व सभी विद्यालयों में शिक्षण कार्य नियमित ढंग से चलता था। जबकि आपदा के उपरांत प्रभावित विद्यालयों में 40% विद्यालयों में शिक्षण कार्य नियमित रूप से चला तथा 60% प्रभावित विद्यालयों में नियमित रूप से शिक्षण कार्य नही चल पाया है। अतः कहा जा सकता है कि आपदा प्रभावित विद्यालयों में शिक्षण कार्य भी अत्यधिक प्रभावित हुआ है। तालिका 1.3 के कथन 15 से स्पष्ट है कि आपदा प्रभावित उच्च प्राथमिक विद्यालयों में आपदा से पूर्व नियमित रूप से गृहकार्य विद्यार्थियों को दिया जाता था। और आपदा के उपरांत भी नियमित रूप से विद्यार्थियों को गृहकार्य दिया जाता है। कथन 16 दर्शाता है कि आपदा प्रभावित उच्च प्राथमिक विद्यालयों में आपदा से पूर्व नियमित रूप से सभी विद्यालयों में विद्यार्थियों को दिया गया गृहकार्य नियमित रूप से चेक किया जाता था। तथा आपदा के उपरांत भी सभी प्रभावित विद्यालयों में नियमित रूप से गृहकार्य चेक किया जाता है। कथन 17 दर्शाता है कि आपदा प्रभावित उच्च प्राथमिक विद्यालयों मे आपदा से पूर्व 80% विद्यालयों में परीक्षायें वर्ष में 4 बार होती थी तथा 20% विद्यालयों में 2 बार होती थी और आपदा के उपरांत भी प्रभावित विद्यालयों में पूर्व की भाँति परीक्षायें आयोजित होती रही है। कथन 18 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि आपदा प्रभावित उच्च प्राथमिक विद्यालयों में आपदा से पूर्व 80% विद्यालयों में शिक्षा समन्वयक व शिक्षा अधिकारियों द्वारा नियमित निरीक्षण किया जाता था तथा 20% विद्यालयों में नियमित निरीक्षण नही किया जाता था और आपदा के उपरांत भी 80% विद्यालयों में निरीक्षण किया जाता है तथा 20% विद्यालयों में निरीक्षण नही किया जाता है।

तालिका 1.4

विद्यालय प्रशासन एवं प्रबंधन से संबन्धित तालिका

क्र0सं0	आपदा से पूर्व स्थिति		आपदा उपरान्त स्थिति	
कथन 19	भोजन सामग्री पहुँचाने हेतु कठिनाई का सामना			
1	हाँ	0%	हाँ	60%
2	नहीं	100%	नहीं	40%
कथन 20	शिक्षक अभिभावक अधिवेशन			
1	हाँ	100%	हाँ	100%
2	नहीं	0%	नहीं	0%
कथन 21	अनिवार्य वेशभूषा			
1	हाँ	100%	हाँ	40%
2	नहीं	0%	नहीं	60%
कथन 22	कार्य कलाप का रिकॉर्ड			
1	हाँ	100%	हाँ	100%
2	नहीं	0%	नहीं	0%
कथन 23	विद्यालय में शिक्षकों की संख्या			
1	हाँ	80%	हाँ	40%
2	नहीं	20%	नहीं	60%
कथन 24	आपदा से शिक्षण कार्य प्रभावित			
1			हाँ	80%
2			नहीं	20%

तालिका 1.4 के कथन 19 के अवलोकन से स्पष्ट है कि आपदा प्रभावित उच्च प्राथमिक विद्यालयों में आपदा से पूर्व भोजन–समग्री पहुंचाने में कठिनाई का सामना नही करना पड़ता था। जबकि आपदा के उपरांत प्रभावित विद्यालयों में से 60% विद्यालयों में भोजन सामग्री पहुंचाने में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। जबकि 40% प्रभावित विद्यालयों में भोजन सामग्री बिना किसी कठिनाई के पहुंचती है। कथन 20 के अवलोकन से स्पष्ट है कि आपदा प्रभावित उच्च प्राथमिक विद्यालयों में आपदा से पूर्व सभी विद्यालयों में समय–समय पर शिक्षक अभिभावक बैठकों का आयोजन किया जाता था। और आपदा के उपरांत भी नियत समय पर सभी विद्यालयों में शिक्षक अभिभावक बैठकों का आयोजन किया जाता है।

कथन 21 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि उच्च प्राथमिक स्तर के आपदा प्रभावित सभी विद्यालयों में आपदा के पूर्व विद्यार्थी अनिवार्य वेशभूषा में विद्यालय आते थे जबकि आपदा के उपरांत 40% विद्यालयों में ही विद्यार्थी उचित वेशभूषा में विद्यालय आते है। तथा 60% विद्यालयों में आपदा उपरांत विद्यार्थी अनिवार्य वेशभूषा में विद्यालय नही आते है। कथन 22 के अवलोकन से स्पष्ट है कि आपदा प्रभावित सभी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में आपदा से पूर्व नियमित रूप से विद्यालयों के कार्य–कलापों का रिकार्ड रखा जाता था और आपदा के उपरांत भी आपदा प्रभावित सभी विद्यालयों में नियमित रूप से विद्यालयों के कार्य–कलापों का रिकार्ड रखा जाता है। कथन 23 दर्शाता है कि आपदा प्रभावित उच्च प्राथमिक

विद्यालयों में आपदा से पूर्व 80% विद्यालयों में शिक्षकों की संख्या पर्याप्त थी तथा 20% विद्यालयों में नही। जबकि आपदा के उपरांत आपदा प्रभावित विद्यालयों में से 40% विद्यालयों में ही शिक्षकों की संख्या पर्याप्त है तथा 60% विद्यालयों में आपदा के उपरांत शिक्षकों की पर्याप्त संख्या नही है। कथन 24 दर्शाता है कि आपदा प्रभावित 80% विद्यालयों ने माना है कि आपदा के कारण विद्यालय का शिक्षण कार्य प्रभावित हुआ है तथा 20% विद्यालयों ने माना कि शिक्षण कार्य प्रभावित नही हुआ।

निष्कर्ष

इस प्रकार प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर कहा जा सकता है कि अगस्त्यमुनि ब्लॉक के आपदा प्रभावित उच्च प्राथमिक विद्यालय आपदा के कारण अत्यधिक प्रभावित हुये हैं। आपदा में पूर्णतः क्षतिग्रस्त विद्यालय के छात्र–छात्राओं को नये परिवेश में जाकर शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती है। अस्थायी तौर पर यह कुछ समय के लिए सही है मगर लम्बें अंतराल तक विद्यालय का पुनः निर्माण ना होने के कारण विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को अस्थायी संचालित विद्यालयों में विद्यालयों में विद्यालयी मूलभूत सुविधाओं से जूझना पड़ता है जो कि अधिकाश तथा शिक्षण प्रक्रिया के लिए उचित नही है। क्योंकि अनयंत्र स्थानों में विद्यार्थियों केा समस्याओं का सामना करना पड़ता है, अतः आपदा में पूर्णतः क्षतिग्रस्त विद्यालयों का पुनः निर्माण कार्य शीघ्रता पूर्वक सम्पन्न कराया जाना चाहिए यदि पुनः निर्माण कार्य में देरी हो तो सरकार को अस्थायी विद्यालयों में अतिरिक्त संसाधनों की व्यवस्था करनी चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अमर उजाला (2014), ''देहरादून शुक्रवार 5 दिसम्बर

आपदा प्रबन्धन कक्षा 10 पाठ्यपुस्तक 10 पाठ्यपुस्तक,(2013) विद्यालयी शिक्षा उत्तराखण्ड।

कोठारी, सी0आर0 (2008) रिसर्च मैथडोलॉजी'' न्यू ऐज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स हाउस, आगरा।

कौल लोकेश(2009) ''शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली,'' विकास प्रकाशन, नोएडा।

सिंह, ओ.पी.(1992), ''पाठ्यक्रम का बढ़ता बोझ और सामंजस्य की आवश्यकता''. भारतीय आधुनिक शिक्षा,ए न.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

हिन्दुस्तान समाचार पत्र (2013,18 जून से 20 जून व 1–3 24 जुलाई।

दैनिक जागरण समाचार पत्र (2013),18 जून से 20 जून व 1 से 21जुलाई।

Websites

Social sector plan status report Rudraprayag march 2014

www.rudraprayag.nic.in

Social sector plan status report chamoli march 2014

www.chamoli.nic.in

Social sector plan status report Pithoragarh march 2014

www.pithoragarh.nic.in

National Institute of Disaster Management, Govt. Of India, New Delhi, 2013 (EM-DAT), retrieve from http://www.emdat.be.

http://rudraprayag.nic.in http:// nidm.gov.in/PDF/pubs/ukd-p3.pdfs